Raga of the Month November 2022 Raga DevagandhariTodi राग देवगांधारी तोड़ी

राग देवगांधारीतोड़ी यह एक अप्रचलित राग है। इस रागका सृजन आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीने किया है। उन्हीके किताब "अभिनव गीत मंजरी"के भाग ३ में इस रागका वर्णन किया है। उस किताबमें उन्होंने दो बंदिशे और स्वरविस्तार दिया है। यह राग तोडीका एक प्रकार है। इस रागमें दोनों रिषभ, गंधार, धैवतोंका और कोमल निषादका प्रयोग होता है। षडज वादी और पंचम संवादी है। इसकी जाति संपूर्ण होते हुए भी चलन वक्र है। गानसमय प्रातःकालका दूसरा प्रहर है। रागके स्वरूपके बारेमें हम कह सकते हैं की इस रागमे राग देवगांधार मुख्य राग रखते हुए उसमे तोड़ी अंगका समावेश किया है।

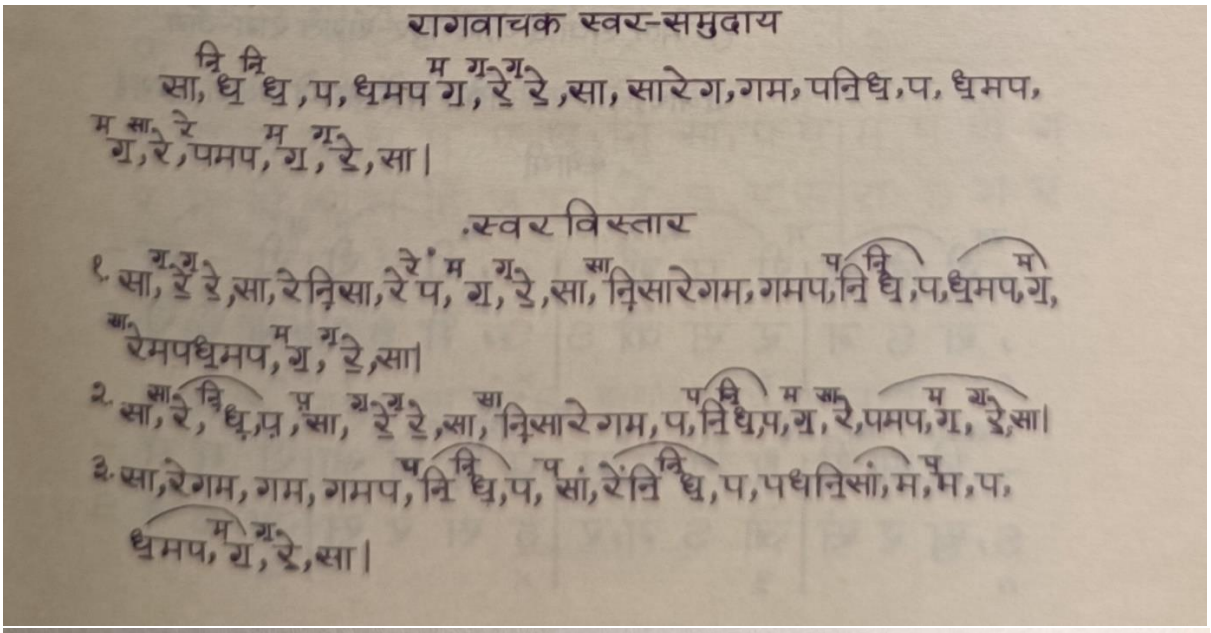

रागवाचक स्वर-समुदाय

सा, ध ध, प, धमप ग, रे रे, सा, सारेग, गम, पनिध, प, धमप,
ग, रे, पमप, ग, रे, सा।

स्वरविस्तार

१. सा, रे रे, सा, रेनिसा, रे प, ग, रे, सा, निसारेगम, गमप, नि ध, प, धमप, ग,
रेमपधमप, ग, रे, सा।

२. सा, रे, ध, प, सा, रे रे, सा, निसारेगम, प, निध, प, ग, रे, पमप, ग, रे, सा।

३. सा, रेगम, गम, गमप, नि ध, प, सां, रेंनि ध, प, पधनिसां, म, म, प,
धमप, ग, रे, सा।

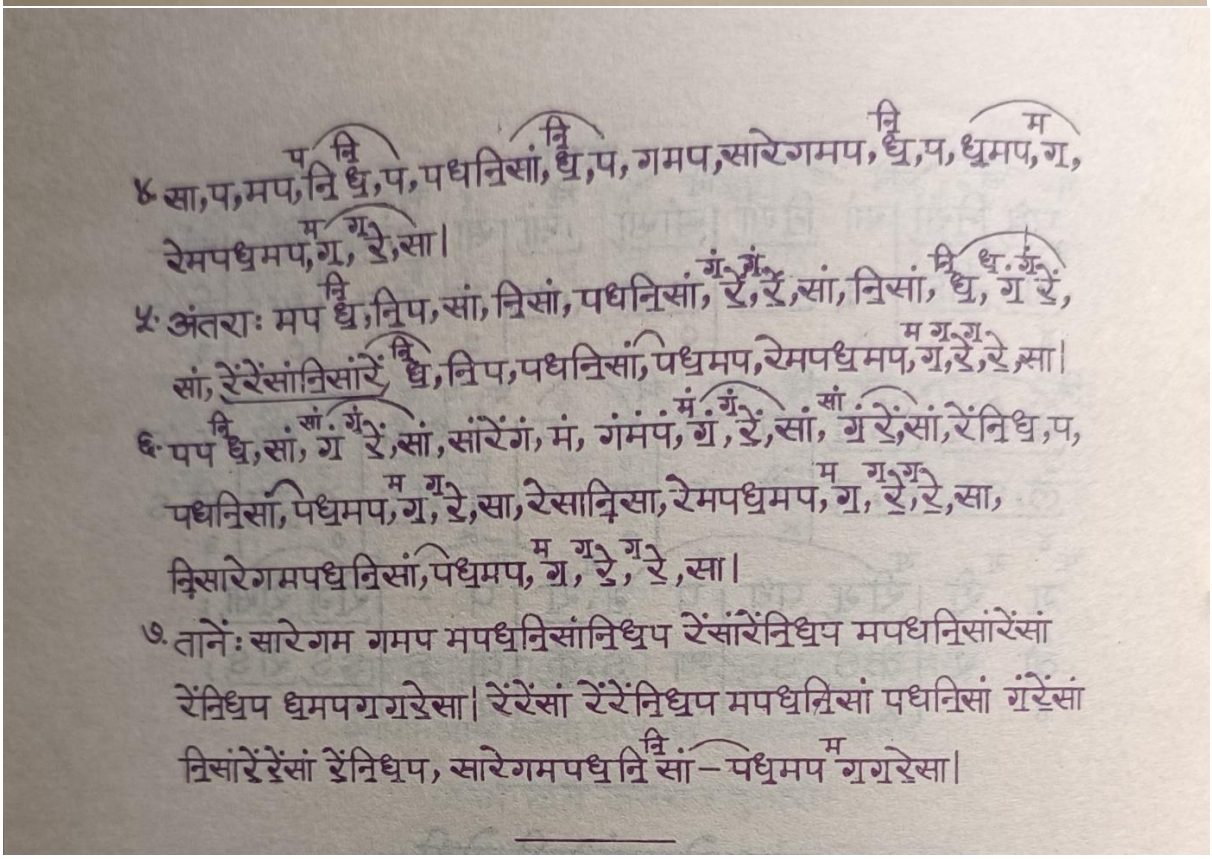

४. सा, प, मप, नि ध, प, पधनिसां, ध, प, गमप, सारेगमप, ध, प, धमप, ग,
रेमपधमप, ग, रे, सा।

५. अंतराः मप ध, निप, सां, निसां, पधनिसां, रें, रें, सां, निसां, ध, ग रें,
सां, रेंरेंसांनिसांरें, ध, निप, पधनिसां, पधमप, रेमपधमप, ग, रे, रे, सा।

६. पप ध, सां, ग रें, सां, सांरेंगं, मं, गंमंपं, गं, रें, सां, गंरें, सां, रेंनिध, प,
पधनिसां, पधमप, ग, रे, सा, रेसानिसा, रेमपधमप, ग, रे, रे, सा,
निसारेगमपधनिसां, पधमप, ग, रे, रे, सा।

७. तानें: सारेगम गमप मपधनिसांनिधप रेंसांरेंनिधप मपधनिसांरेंसां
रेंनिधप धमपगगरेसा। रेंरेंसां रेंरेंनिधप मपधनिसां पधनिसां गंरेंसां
निसांरेंरेंसां रेंनिधप, सारेगमपधनि सां– पधमप गगरेसा।

आजके <u>ऑडियोमें</u> हम आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजी रचित विलम्बित और द्रुत रचना सुनेंगे, जो उनके शिष्य पंडित के जी गिंडेजीने गायी हुई है। <u>संदर्भ</u> : "अभिनव गीत मंजरी" भाग ३,

<u>आभार</u> : पंडित यशवंतबुवा महाले, श्री अजय गिंडे; १-११-२०२२